

## विचार बिन्दु

अवसर तो सभी को ज़िंदगी में मिलते हैं किंतु उनका सही वक्त पर सही तरीके से इस्तेमाल कितने कर पाते हैं? –संतोष गोयल

## स्मार्टफोन का उपयोग : बच्चों के मानसिक विकास पर विपरीत प्रभाव

स्मार्टफोन क्रांति ने जहां प्रगति और विकास के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किये हैं वहीं इसके दुष्परिणामों से भी दो-दो हाथ करने पड़ रहे हैं। विशेषकर पढ़ने वाले बच्चे स्मार्टफोन लवर हो गए हैं। दुनियाभर में स्मार्टफोन के बच्चों पर पड़ रहे दुष्प्रभावों पर बहस तेज हो रही है। भारत की बात करें तो 10 से 14 वर्ष की आयु सीमा के 83 प्रतिशत बच्चे स्मार्टफोन का उपयोग कर रहे हैं। कोरोना के बाद यह संख्या तेजी से बढ़ी है। एक अध्ययन रिपोर्ट के मुताबिक यह वैश्विक औसत 76 प्रतिशत से 7 प्रतिशत अधिक है। बच्चों के बहुतायत से स्मार्टफोन के उपयोग पर कई देशों ने रोक लगा दी है। कई देशों की स्कूलों में भी प्रतिबन्ध लगाए गए हैं। बताया जाता है स्मार्टफोन के उपयोग से बच्चों में 150 प्रतिशत तनाव बढ़ने का खुलासा हुआ है।

चाइल्ड राइट की टॉप संस्था नेशनल कमीशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट की रिपोर्ट से एक चौकाने वाला खुलासा हुआ है कि करीब 10.1 फीसदी बच्चे ही स्मार्टफोन के इस्तेमाल से ऑनलाइन पढ़ाई करते हैं। बाकी 59.2 फीसदी बच्चे स्मार्टफोन का इस्तेमाल ऑनलाइन चैटिंग और अन्य कामों में इस्तेमाल करते हैं। मतलब हर 7 में से 6 बच्चे स्मार्टफोन का इस्तेमाल पढ़ाई नहीं, बल्कि सोशल मीडिया चलाने के लिए करते हैं। जबकि केवल 7 में से 1 ही बच्चा स्मार्टफोन के इस्तेमाल से ऑनलाइन पढ़ाई करता है। रिपोर्ट में पाया गया है कि माता-पिता और अभिभावक बच्चों को 12 से 13 वर्ष की आयु में लैपटॉप और टैबलेट की जगह स्मार्टफोन ज्यादा दिलाते हैं। रिपोर्ट में यह भी पाया गया है कि करीब 72.70 फीसदी अध्यापकों को इससे पहले स्मार्टफोन के इस्तेमाल का एक्सपीरियंस नहीं था। इनमें से करीब 54.1 फीसदी का मानना है कि स्मार्टफोन के क्लासरूम में इस्तेमाल से ध्यान भटकता है।

एक शैक्षिक रिपोर्ट के मुताबिक स्मार्टफोन से बचपन और शैक्षिक जीवन इंटरनेट के जंगल में गुम हो रहा है। पिछले कई सालों से सूचना तकनीक ने जिस तरह से तरक्की की है उसने छात्रों की जीवनशैली को ही बदल डाला है। बच्चे और युवा एक पल भी स्मार्टफोन से खुद को अलग रखना गंवारा नहीं समझते। इनमें हर समय एक तरह का नशा सा सवार रहता है। मौजूदा दौर में बच्चों में खेलकूद और पढ़ाई का स्थान स्मार्टफोन ने ले लिया है। इसका सीधा प्रभाव बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास पर पड़ा है। शहरों के साथ अब गांवों में भी मोबाइल की पहुँच होने से बच्चों में इंटरनेट की लत बढ़ गई है। इससे उनमें संवादहीनता का खतरा बढ़ रहा है। बच्चों के ऐसे व्यवहार को अनदेखा करने की जगह इस पर सजग और सावधान होने की जरूरत है।

ब्रिटेन और इटली की यूनिवर्सिटी के एक अध्ययन पर विश्वास करे तो पाएंगे इंटरनेट का ज्यादा इस्तेमाल करने वाले स्टूडेंट पढ़ाई से तालमेल नहीं बैठा पाने के कारण पिछड़ते जा रहे हैं। ऐसे छात्र अकेले रहना पसंद करते हैं जिससे उनका भविष्य खतरों में पड़ गया है। अपने बच्चों को मोबाइल और कंप्यूटर पर गेम खेलते अनेक माता-पिता बहुत खुश होते हैं। वे दूसरों को बड़े गर्व के साथ यह बताते तर्क भी नहीं हिचकते की उनका बेटा डिजिटल दुनिया के नए जमाने के साथ दौड़ रहा है। वे बड़े खुशी से बताते हैं कि वह मोबाइल पर फोटो निकास लेता है। मैसेज भेज देता है। व्हाट्सप पर बात कर लेता है और फोटो, वीडियो शेयर कर लेता है। यहाँ तक कि गुगल पर कुछ भी खोज लेता है। लेकिन शायद वह इस बात से अनजान है कि जिसे वह बच्चों की स्मार्टनेस समझ रहे हैं वह उसके विकास में बाधा भी बन सकता है। विशेषज्ञ मानते हैं कि इलेक्ट्रॉनिक गजेट और कंप्यूटर का अत्यधिक प्रयोग बच्चों के लिए अच्छा नहीं है। इससे उनमें संवादहीनता और चिड़चिड़ेपन की प्रवृत्ति बढ़ती है।

ब्रिटेन और इटली की यूनिवर्सिटी के संयुक्त अध्ययन में पाया गया कि जो छात्र डिजिटल तकनीक का अधिकतम उपयोग करते हैं, वे पढ़ाई के साथ पूरी तरह नहीं जुड़ पाते और फिसलुड़ी साबित होते हैं। ज्यादा इंटरनेट के इस्तेमाल से उन्हें अपेक्षित परिणाम नहीं मिलता और उनमें अकेलेपन की भावना घर कर जाती है।

ब्रिटेन की स्वानसी और इटली की मिलाना यूनिवर्सिटी ने संयुक्त अध्ययन में डिग्री कोर्स में सेहत संबंधी अध्ययन के लिए दुनियाभर की 285 यूनिवर्सिटी के छात्रों से उनके डिजिटल उपयोग, पढ़ाई और रिजल्ट के बारे में जानकारी ली गई थी। अध्ययन में 25 प्रतिशत छात्रों ने बताया कि उन्होंने दिनभर में 4 घंटे ऑनलाइन बिताए जबकि 70 प्रतिशत ने एक से तीन घंटे तक इंटरनेट का इस्तेमाल किया। इनमें 40 प्रतिशत छात्रों ने सोशल नेटवर्किंग का इस्तेमाल किया जबकि 30 प्रतिशत ने सूचना के लिए इसका इस्तेमाल किया। वहीं एक अन्य रिपोर्ट में बताया गया था कि इंटरनेट की लत से छात्र अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने से कतराने लगते हैं और अपने घर के बाहर की दुनिया में रुचि लेना छोड़ देते हैं। इससे उनका शैक्षिक वातावरण भी प्रभावित होता है। एक अभिभावक का कहना है उसका बेटा स्कूल से आते ही स्मार्टफोन थाम लेता है, कई आवाज लगाने पर भी हिलता तक नहीं। बाहर घूमने की जगह उनका बेटा स्मार्टफोन पर व्यस्त रहता है, लेकिन अब उसके व्यवहार पर चिंता होने लगी है। वह किसी से बात करना तक पसंद नहीं करता, ज्यादा कुछ बोलों तो चिड़ जाता है या चिल्लाकर जवाब देता है। एक दूसरा अभिभावक अपनी बेटी के व्यवहार से चिंतित है। वह कहती है कि अभी आठवीं कक्षा में ही है, लेकिन उसके अंदर इस उम्र के बच्चों सी चपलता और चंचलता नहीं है। काफी कम बोलती है। इंटरनेट सर्फिंग में उसका खाली समय बीतता है।

देश में इंटरनेट के तेजी से बढ़ते इस्तेमाल में बचपन खोता जा रहा है जिसकी परवाह न सरकार को है और न ही समाज इससे चिंतित है। ऐसा लगता है जैसे गैर जरूरी मुद्दे हम पर हावी होते जा रहे हैं और वास्तविक समस्याओं से हम अपना मुँह मोड़ रहे हैं। यदि यह यूँ ही चलता रहा तो हम बचपन को बर्बादी की कगार पर पहुँचा देंगे। अभिभावकों को अपनी इस लापरवाही और बच्चों के प्रति उदासीनता का खामियाजा भी भुगतने को तैयार होना पड़ेगा क्योंकि इंटरनेट ज्ञान के साथ अश्लील सामग्री भी परसोता है जिसका बाल और युवा मन पर विपरीत असर पड़ता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम नए जमाने को अपनाने के साथ उसकी बुराइयों पर भी निगाह रखें ताकि बचपन को गुमराह होने से बचाया जा सके। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया या वीडियो गेम बच्चों को मैनेट की तरह अपनी ओर खींचते हैं। एक बार वे बच्चों के हाथ में गए तो उन्हें इससे दूर करना इम्पॉसिबल हो सकता है। बच्चों का दिमाग उतना डेवलप नहीं हुआ होता है कि वो उस मैनिटिक खिंचाव से खुद को बचा सकें। इसलिए बच्चों को स्मार्टफोन देने में जितनी देरी कर सकें, करें और अगर देना ही पड़े तो पेरेंटल कंट्रोल लगाकर दें।

–अतिथि संपादक, बाल मुकुंद ओझा

वरिष्ठ लेखक और पत्रकार

### राशिफल

गुरुवार 25 अप्रैल, 2024



पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, गुरुवार, विक्रम संवत् 2081, विशाखा नक्षत्र रात्रि 2:24 तक, व्यक्तिगत योग रात्रि 4:53 तक, कुशल करण प्रातः 6:46 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 8:01 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वोर्ध सिद्धि योग रात्रि 2:24 से आरम्भ होगा। बुध मार्गी साँय 6:25 पर होगा। आज व्यक्तिगत पुण्य है और आज प्रतिपदा तिथि में वृद्धि हुई है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:34 तक, चर 10:48 से 12:25 तक, लाभ-अमृत 12:25 से 3:39 तक, शुभ 5:15 से सूर्यास्त तक। राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:57, सूर्यास्त 6:52

**मेष**  
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

**तुला**  
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। मन में असंतोष बना रहेगा। धार्मिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है।

**वृश्चिक**  
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सम्पत्तिगत आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बने लगे। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

**धनु**  
व्यावसायिक कार्यों को प्रार्थनापूर्वक से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रतासुगमता से बने लगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

**मिथुन**  
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**धनु**  
व्यावसायिक कार्यों को प्रार्थनापूर्वक से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रतासुगमता से बने लगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

**कर्क**  
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

**मकर**  
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

**सिंह**  
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य शीघ्रतासुगमता से बने लगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

**कुंभ**  
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बने लगे। आर्थिक कार्यों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बने लगे। शुभ कार्यों के लिए यात्रा संभव है।

**कन्या**  
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नौकरशाही व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक विवादों का निपटारा हो सकता है।

**मीन**  
चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। शुभ कार्यों में व्ययमान सामने आ सकते हैं। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है।

## संपादकीय

## लोक चित्रारामों में श्रीराम

श्रीराम भारतीय जनमानस के मूल भाव में रहे हैं और इसी का ही परिणाम है कि आम जीवन और संस्कारों के साथ-साथ अन्य विभिन्न आयाम यथा कला, साहित्य, जो कि सभ्यता को दिशा और पोषण देते हैं, में श्रीराम का सशक्त निरूपण हुआ है। यहाँ श्रीराम केवल धर्म, समुदाय या संप्रदाय के प्रतिनिधि न होकर संस्कार और संस्कृति के पर्याय हैं। भारत ही नहीं बल्कि थाईलैंड, सूरीनाम और मॉरिशस सरीखे देशों में भी श्रीराम का जीवन और आदर्श लोक व्यापक है, प्रासंगिक है और समादृत है।

संस्कृत साहित्य की अनुपम कृतियों रघुवंश, प्रसाद राघव और उत्तर रामचरित में रामकथा का सुन्दर उल्लेख मिलता है। साहित्य के साथ-साथ ललित कलाओं विशेषकर चित्रकला में भी रामायण, श्रीरामचरितमानस और अन्य कृतियों में उल्लेखित रामकथा के प्रसंगों का चित्रण हुआ है। रामायण और रामकथा के प्रसंग लोक चित्रों से लेकर मंदिरों, महलों, हवेलियों के भित्ति-चित्रों, विभिन्न लघुचित्रण शैलियों यथा राजपूत, कांगड़ा, बसोली आदि से लेकर समसामयिक और आधुनिक चित्रकारों के कला-कर्म में मुखरित होते हैं। लोक चित्रांकन परंपरा में श्रीराम जन-व्यापक होकर, मानवीय मूल्यों के सशक्त संवाहक के रूप में उद्घाटित होते हैं। 7 वीं और 12 वीं शताब्दी के मध्य दक्षिण भारत, विशेषकर तमिलनाडु में प्रारम्भ हुआ, भक्ति आंदोलन 15 वीं शताब्दी तक उत्तर भारत तक पहुंचा।

भक्ति त्रिविडु उपजी लाये रामानन्द,

प्रकट किया कबीर ने, सात दीप नौ खंड

भक्ति के इस प्रचार-प्रसार में चित्रित स्कॉलस का महत्वपूर्ण प्रयोग रहा, जिसमें मुख्य रूप से हरिकथा के तमिल और तेलुगु परंपराओं को निरूपित करते चित्रित स्कॉलस को मौखिक आख्यानों के साथ प्रदर्शित किया जाता था। कला इतिहास की दृष्टि से यह मानना तर्कसंगत है कि उस समय पश्चिम बंगाल के पटुआ और पटंचित्र स्कॉल या आंध्र प्रदेश की कलमकारी परंपराओं जैसी लोक और आदिवासी चित्रकला भी प्रचलन में थी और रामायण के दृश्य

और रामकथा के विविध प्रसंगों के दृश्य उकेरे जा रहे थे।

रामायण के कई संस्करण और रामकथा के प्रसंग, भारतीय जनजातियों जैसे भील, मुंडा, संथाल, गोंड, मीणा, सौरा, कोकंस, राभा, बोडो-कछारी, खासी, मिजोस, मैतेई आदि के बीच लोक-व्यापन हैं। विषय की संरचना और एकता को बनाए रखते हुए, ये समुदाय ग्रंथों और कलाओं में अपने स्वयं के कथानक और उप-कथानक गढ़ते हैं, और सामाजिक-सांस्कृतिक-भौगोलिक परिदृश्य जोड़ देते हैं, जो हो सकता है कि मूल ग्रंथ में न हो। प्रत्येक समूह कला के माध्यम से रामायण या रामकथा के अपने संस्करण को प्रस्तुत करता है। मिथिला चित्रकला या मधुबनी चित्रकला का उद्भव मधुवन (शहद के जंगल), बिहार से हुआ है और लोक मान्यता अनुसार, श्रीराम और सीता जी की पहली मुलाकात यहीं हुई और मिथिला के राजा और सीता जी के पिता जनक ने राम-सीता विवाह के लिए पहल की दीवारों को बाँस, आम और कमल की झाड़ियों और पक्षियों, मछलियों और सर्पों के चित्रों से चित्रित कराया था। आज भी इस क्षेत्र में विवाह अवसरों पर घरों में मधुबनी चित्रकला परंपरा के चित्र इस भाव से बनाये जाते हैं कि, प्रत्येक दुल्हा राम और उसकी पत्नी सीता हैं। मिथिला की सभी बेटियाँ सीता हैं और अवध, जहाँ के राम हैं, के लोग मिथिलावासियों के भाई हैं।

राजस्थान की लोक चित्रांकन परंपरा में भी रामायण और रामकथा प्रसंगों के विषयों पर अथाह चित्र बने हैं और जिन्हें चित्रकथाओं के माध्यम से गेय रूप में सुनाए जाने की परंपरा रही है। कपड़े से बनी फड़ और लकड़ी से बनी कावड़, राजस्थान की विशिष्ट सांस्कृतिक परंपरा की प्रतिनिधि विधाएँ हैं। फड़ में कपड़े पर मूल रंगों जैसे हिमिचं, हिंगुल, पेवडी आदि से किसी कथानक के विविध विषयों को लघु चित्रशैली में चित्रित किया जाता है। शाहपुरा, भीलवाड़ा का जोशी परिवार फड़ बनाने की कला में बहुत माहिर है और इस परिवार ने इस परंपरा को संभल रहा है। "हालाँकि हम अलग-अलग विषयों पर फड़ बनाते हैं, लेकिन रामदला की फड़ (श्रीराम का समूह) एक महत्वपूर्ण

चित्रकार-कल्याण जोशी, भीलवाड़ा फड़ है, जिसमें श्रीराम, श्री कृष्ण और विष्णु जी के प्रसंग चित्रित होते हैं। फड़ चित्र शुरु करने से पहले, हम लोक देवता पाबूजी, या भगवान विष्णु के अवतार देवनारायण जी का ध्यान करते हैं, इन दिनों राम दरवार की फड़ की बाजार में बड़ी माँग है।" कल्याण जोशी।

भीलवाड़ा के कल्याण जोशी पिछले तीस सालों से फड़ बना रहे हैं

श्रीराम पर केंद्रित कावड़, शिल्पी श्री द्वारका प्रसाद सुथार, बस्सी चितौड़गढ़

और श्रीरामचरितमानस के प्रसंगों पर केन्द्रित उनकी फड़ बहुत प्रसिद्ध हुई हैं। यह कला- संस्कार उन्हें अपने पिता पदश्री अलंकृत स्व. श्रीलाल जोशी से विरसे में मिले, जिन्होंने लुप्त-प्रायः फड़ चित्रण को संभला और संभाला। राजस्थान के भोपा (पुरुष पुजारी) फड़ चित्रों को माध्यम के रूप में इस्तेमाल करके रामायण के प्रसंग गाते हैं (फड़-बाचन), जहाँ भोपी (पुजारी की पत्नी) सुनाए जाने वाले प्रसंग पर नृत्य करती हैं, और चौंक के माध्यम से प्रसंगों पर प्रस्तुत किया जाता है, इस संदर्भ में गुजराती लोक गायिका स्व. दिवालीबेन भील का योगदान उल्लेखनीय है।

यह सत्य और तथ्य है कि सम्पूर्ण भारत की लोक और जनजातीय कला



श्रीराम दरवार की फड़, चित्रकार-कल्याण जोशी, भीलवाड़ा फड़ है, जिसमें श्रीराम, श्री कृष्ण और विष्णु जी के प्रसंग चित्रित होते हैं। फड़ चित्र शुरु करने से पहले, हम लोक देवता पाबूजी, या भगवान विष्णु के अवतार देवनारायण जी का ध्यान करते हैं, इन दिनों राम दरवार की फड़ की बाजार में बड़ी माँग है।" कल्याण जोशी।

भीलवाड़ा के कल्याण जोशी पिछले तीस सालों से फड़ बना रहे हैं



श्रीराम पर केंद्रित कावड़, शिल्पी श्री द्वारका प्रसाद सुथार, बस्सी चितौड़गढ़

और श्रीरामचरितमानस के प्रसंगों पर केन्द्रित उनकी फड़ बहुत प्रसिद्ध हुई हैं। यह कला- संस्कार उन्हें अपने पिता पदश्री अलंकृत स्व. श्रीलाल जोशी से विरसे में मिले, जिन्होंने लुप्त-प्रायः फड़ चित्रण को संभला और संभाला। राजस्थान के भोपा (पुरुष पुजारी) फड़ चित्रों को माध्यम के रूप में इस्तेमाल करके रामायण के प्रसंग गाते हैं (फड़-बाचन), जहाँ भोपी (पुजारी की पत्नी) सुनाए जाने वाले प्रसंग पर नृत्य करती हैं, और चौंक के माध्यम से प्रसंगों पर प्रस्तुत किया जाता है, इस संदर्भ में गुजराती लोक गायिका स्व. दिवालीबेन भील का योगदान उल्लेखनीय है।

## जमीन धंसने से बने गढ़दे की जयपुर की भारतीय भू-सर्वेक्षण विभाग की टीम करेगी जांच

गत 15 अप्रैल की रात को सहजरासर गांव के नजदीक रोही में खेत में जमीन धंस गई थी

लूणकरनसर, (निर्स) तहसील के ग्राम सहजरासर में अचानक जमीन धंसने से बने गढ़दे की जांच के लिए अब जयपुर के झालाना इंजीनीरिंग भारतीय भू-सर्वेक्षण की टीम आएगी। सोमवार को जमीन धंसने से बने गढ़दे के घटना स्थल का उपखण्ड अधिकारी राजेंद्र कुमार व राजस्व तहसीलदार बाबूलाल ने दौरा कर जायचा लिया। मौके पर पुलिस अधिकारियों को सुरक्षा को देखते हुए लोगों की आवाजाही को लेकर सख्ती से निपटने के निर्देश दिए। वहीं धारा 144 तोड़ने

वाले लोगों के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश दिए गए। प्रशासन ने लोगों को जमीन धंसने से बने गढ़दे से दूर रहने की हिदायत दी। वहीं सुरक्षा के लिए पुलिस के जवानों का पहरा भी तैनात है। उपखण्ड अधिकारी ने बताया कि मामले की जांच के लिए भारतीय भू-सर्वेक्षण विभाग की टीम के अधिकारियों ने मंगलवार शाम तक पहुंचने की बात कही है तथा जांच होने के बाद ही जमीन धंसने का कारण स्पष्ट हो जाएगा। जमीन धंसने के एक सप्ताह बाद

जमीन धंसने से बने गढ़दे के घटना स्थल का एसडीएम व राजस्व तहसीलदार ने जायजा लिया, मौके पर पुलिस अधिकारियों को सुरक्षा को देखते हुए लोगों की आवाजाही को लेकर सख्ती से निपटने के निर्देश दिए

अब गढ़दे के बढ़ने व गहरा होने जैसी ख़ास हल-चल नजर नहीं आ रही है। जमीन धंसने से आस-पास कई मीटर तक बड़ी-बड़ी दरारें आ चुकी है तथा सख्ती भी टूट चुकी है। गौरतलब है कि 15 अप्रैल की रात को ढाणी

भोपालाराम से सहजरासर गांव जाने वाली सड़क पर सहजरासर गांव के नजदीक रोही में एक खेत में अचानक जमीन धंस गई थी। जमीन धंसने से 150 से 200 फीट लम्बा-चौड़ा तथा 70-80 फीट

गहरा गड्ढा हो गया। इसके अलावा सड़क समेत आस-पास के इलाके में बड़ी-बड़ी दरारें बन गईं। इससे आस-पास के इलाके में कौतूहल की स्थिति बनी है। जमीन धंसने से बने गढ़दे को लेकर खान एवं भू-विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों ने मौके पर पहुंचकर जांच की, लेकिन कोई निष्कर्ष पर बात नहीं पहुंची। वैज्ञानिकों ने जोसीसी के वैज्ञानिकों से जांच का सुझाव दिया था। इसको लेकर उपखण्ड प्रशासन ने भी जिला कलेक्टर को लिखा गया था।

## कलेक्टर की आईडी का दुरुपयोग कर निजी सहायक ने आर्म्स लाइसेंस बनाया

एडीएम ने तत्कालीन कलेक्टर के निजी सहायक सहित पांच कार्मिकों के विरुद्ध मामला दर्ज कराया

यह कार्रवाई पूर्व विधायक रामहेत की शिकायत पर मिश्रि्ट शासन सचिव के आदेश पर गठित जांच समिति की जांच में दोषी पाए जाने पर की गई

मुख्यमंत्री को शिकायत भेजी गई थी। मुख्यमंत्री को भेजी गई शिकायत पर विशिष्ट शासन सचिव ने गत 11 मार्च को जांच के आदेश दिए थे। जांच में सामने आया कि तत्कालीन जिला कलेक्टर के निजी सहायक नरेंद्र चौधरी ने जिला कलेक्टर की आईडी का दुरुपयोग कर आर्म्स अनुज्ञापत्र जनरेट किया है। अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने जांच में सामने आने पर नरेंद्र चौधरी सहायक प्रशासनिक अधिकारी सहित जितेंद्र शर्मा अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी नरेश चंद्र शर्मा कनिष्ठ सहायक सहित पांच

के विरुद्ध पुलिस में मामला दर्ज कराया गया है। अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने पुलिस को दी रिपोर्ट में बताया है कि नरेंद्र चौधरी ने तत्कालीन जिला कलेक्टर के निजी सहायक रहते हुए यह अपराधिक कृत्य किया है।

निजी सहायक नरेंद्र चौधरी ने जिला कलेक्टर के अनुमोदन आदेशों के बिना फर्जकारी करते हुए अनुज्ञा पत्र जनरेट करने में जिला कलेक्टर की आईडी का दुरुपयोग कर एएलआईएस पोर्टल पर आर्म्स अनुज्ञापत्र को जनरेट किया है। इस कार्य में सहयोगी रहे अन्य चार कार्मिकों के विरुद्ध खैरथल पुलिस

ने अतिरिक्त जिला कलेक्टर की रिपोर्ट पर मामला दर्ज किया है। पुलिस में मामला दर्ज होने के पश्चात कलेक्ट्रेट कार्यालय में कार्मिकों के बीच चर्चा

आधिकारियों के बीच चर्चा बनी है। मामले की जांच खैरथल थाना अधिकारी दिनेश कुमार कर रहे हैं। पूर्व विधायक रामहेत यादव ने मुख्यमंत्री को लिखित शिकायत में अवगत कराया कि जिला कलेक्टर के निजी सहायक नरेंद्र चौधरी ने कोअ्रेस प्रत्याशी के पक्ष में प्रचार किया तथा पद का दुरुपयोग करते हुए नियमों का उल्लंघन कर आर्म्स अनुज्ञा पत्र जारी किया है। पूर्व विधायक ने आरोप लगाया कि नरेंद्र चौधरी को कोअ्रेस सरकार में राजनीतिक दबाव में तत्कालीन रहे जिला कलेक्टर ने निजी सहायक के पद पर लगाया था।

### पेयजल समस्या को लेकर प्रदर्शन

रावतभाटा, (निर्स)। रावतभाटा क्षेत्र के वार्ड नंबर 12 और 39 में फिर से पेयजल समस्या गहरा गई है। समस्या को लेकर वार्ड की महिलाएं चिलचिलाती धूप में दोपहर दो बजे जलदाय विभाग पहुंची। महिलाओं का कहना है कि पिछले कई दिनों से पेयजल समस्या से जूझ रही है। नलों में पीने का पानी तक नसीब नहीं होता। इधर बढ़ती गर्मी के साथ पानी की आपूर्ति नहीं होने से महिलाओं में रोष है। पानी की समस्या को लेकर महिलाओं ने जलदाय विभाग में ज्ञापन देकर समस्या के समाधान की मांग की। नगर की महिलाओं का कहना है कि रावतभाटा में चंबल नदी का अपार सागर है। ऐसे में हमेशा ही पानी की किल्लत रहती है। जलदाय विभाग के अभियंता अविनाश वामन ने बताया कि महिलाओं ने समस्या समाधान का प्रार्थना पर दिया है। उक्त क्षेत्र में निरक्षण कर कारणों का पता करेंगे। हम सभी क्षेत्र में बदवार पाते देते हैं। अगर कुछ वार्ड में लोग सप्लाई के दौरान मोटर चला देते हैं। ऐसे में बिजली विभाग को पर देकर सप्लाई के समय बिजली कटौती कराई जाएगी।